Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

राक्षस जाति का वंशगत परिचय :- वाल्मीकीय रामायण की दृष्टि में।

डॉ॰ संजय कुमार
अकबरपुर,
नवादा (बिहार) भारत।

शोध आलेख सार :- महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के अन्तर्गत उत्तर काण्ड में राक्षस जाति में उत्पन्न हेति, प्रहेति के साथ ही मुनि विश्रवा एवं कैकसी के पुत्रों रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण आदि का विशद् वर्णन प्रस्तुत किया है। इन्होंने दिति, अदिति से उत्पन्न वंश का भी परिचय प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द :- महर्षि, अन्तर्गत्, विश्रवा, कैकसी, रावण, कुम्भकर्ण, विशद्।

महर्षि वाल्मीकि ने अपनी कालजयी कृति 'रामायण' में कवि-दृष्टि से दो भिन्न संस्कृतियों का चित्रण किया है- आर्य संस्कृति एवं अनार्य संस्कृति। आर्य संस्कृति के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं और अनार्य (राक्षस) संस्कृति का प्रतीक रावण है। दोनों संस्कृतियों का वर्णन महर्षि ने विस्तार पूर्वक किया है। यहाँ राक्षसों की वंशावली का वर्णन 'रामायण' के उत्तर-काण्ड में प्राप्त होता है।

सर्वप्रथम राक्षसों की उत्पति विषयक प्रष्नों पर विचार करने पर विष्णु पुराण में प्राप्त होता है-

"मैवं भो रक्ष्यतामेष यैरूत्कं राक्षसास्तुते।

ऊचु: खदाम: इत्येते ये ते यक्षास्तु जक्षणात्।।[1]

अर्थात् जिन्होंने यह कहा कि "इनकी रक्षा करो'' वे 'राक्षस' कहलाये और जिन लोगों ने कहा हम खायेंगे 'यक्ष' कहलाये। इससे संकेत प्राप्त होता है कि 'राक्षस' उन लोगों को कहा गया जो रक्षक थे। अत: राक्षसों की एक मूलभूत प्रवृत्ति थी दूसरों की रक्षा करना और उनकी संस्कृति थी 'रक्ष' संस्कृति।

राक्षस जाति की उत्पत्ति विद्वानों ने इस प्रकार की है- रा+क्षस। 'रा' मिस्र की भाषा में सूर्य को कहा जाता है। सूर्य आदि बारहो भाई आदित्य कहलाते थे। इनकी सभ्यता का प्रतीक 'रा' शब्द है। 'क्षस' - 'यक्ष' का प्रतीक है। यक्ष संस्कृति का संस्थापक विश्रवा पुत्र कुबेर था। रावण ने अपने भाई कुबेर की 'यक्ष' संस्कृति और आदित्यों की 'रा' संस्कृति को मिला कर राक्षस (रा+क्षस) संस्कृति की एक राक्षस जाति का संगठन किया। इसके सम्बन्ध में आचार्य चतुरसेन ने लिखा है- "रक्षाम:'' रक्षा करेंगें। 'यक्षाम:' खायेंगे। ये दो मूल संस्कृति के आधार-सिद्धांत रावण और कुबेर ने स्थापित किए थे।

महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' के उत्तर काण्ड में राक्षसों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विशद् विवरण दिया है। रघुनाथ जी के द्वारा प्रश्न पूछने पर महातेजस्वी कुम्भयोनि अगस्त्य जी उन्हें रावण के कुल जन्म तथा वरदान प्राप्ति आदि का प्रसंग सुनाते हैं-

"तावत् ते रावणस्येदं कुलं जन्म च राघव।
वरप्रदानं च तथा तस्मै उक्तं ब्रवीमि ते।।[2]

इसी क्रम में मुनि अगस्त्य जी ने यह बताया कि मुनिवर पुलस्त्य एवं राजर्षि तृणबिन्दु की कन्या से एक पुत्र का जन्म हुआ जो विश्रवा या विश्रवण या पौलस्त्य नाम से तीनों लोकों में विख्यात् हुआ–

तस्मात् स विश्रवा नाम भविष्यति न संषय:।
एवमुक्ता तु सा देवी प्रहृष्टेनान्तरात्मना।।
अचिरेणैव कालेनासूत विश्रवसं सुतम्
त्रिषु लोकेषु विख्यातं यशोधर्मसमन्वितम्।।[3]

आगे महर्षि अगस्त्य के वचन को सुनकर श्रीराम को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुनि से कहा कि मुनिवर राक्षस कुल की उत्पत्ति तो विश्रवा से ही मानी जाती है। किन्तु इस समय आप दूसरे कुल से भी राक्षसों के प्रादुर्भाव की बात करते हैं–

श्रुत्वागत्येरितं वाक्यं रामो विस्मयमागत:।
कथमासीत् तु लङ्कायां सम्भवो रक्षसां पुरा।।
पुलस्त्य वंशादुद्भुता राक्षसा इति न: श्रुतम्।
इदानीमन्यतश्चापि सम्भव: कीर्तितस्त्वया।।[4]

अगर दूसरे कुल से राक्षसों की उत्पत्ति हुई है तो उनके पूर्वज कौन थे? तब अगस्त्य जी ने कहा कि "जल से प्रकट् हुए कमल से उत्पन्न प्रजापति ब्रह्मा जी ने पूर्व काल में समुद्रगत जल की सृष्टि करके उसकी रक्षा के लिए अनेक प्रकार के जल–जन्तुओं को उत्पन्न किया। वे जन्तु भूख–प्यास से पीड़ित हो "अब हम क्या करें ऐसी बात करते हुए अपने जन्मदाता ब्रह्मा जी के पास गए। प्रजापति ने कहा कि जल–जन्तुओं तुम यत्न पूर्वक इस जल की रक्षा करो। वे सब जन्तु भूखे–प्यासे थे। उनमें कुछ ने कहा– 'हम इस जल की रक्षा करेंगे और दूसरे ने कहा हम इसका भक्षण(पूजन) करेंगे। तब ब्रह्मा जी ने कहा तुममें से जिन लोगों ने रक्षा की बात कही है वे राक्षस नाम से प्रसिद्ध हों और जिन्होंने भक्षण करना स्वीकार किया है वे यक्ष नाम से विख्यात् हो। इस प्रकार वे जीव राक्षस और यक्ष इन दो जातियों में विभक्त हो गए''।[5]

उन राक्षसों में हेति और प्रहेति नामक दो भाई हुए, जो मधु और कैटभ के समान शक्तिशाली थे।

"तत्र हेति: प्रहेतिष्च भ्रातरौ राक्षसाधिपौ।
मधुकैटभ संकाशौ बभूवतुररिंदमौ।।[6]

उनमें प्रहेति धर्मात्म आचरणवश तपस्या करने चला गया परंतु हेति ने काल की कुमारी भगिनी भया के साथ विवाह कर विद्युत्केश नामक पुत्र को उत्पन्न किया। विद्युत्केश का विवाह संध्या की पुत्री सालकटङ्कटा से हुआ। इससे भी एक पुत्र हुआ जो भगवान शिव एवं माता पार्वती के आषीर्वाद से सुकेश् नाम से प्रसिद्ध हुआ। सुकेष को धर्मात्मा तथा वैभव सम्पन्न जान कर ग्रामणी नामक गन्धर्व ने अपनी पुत्री देववती का विवाह उसके साथ कर दिया। सुकेष एवं देववती के संयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति हुई–माल्यवान, सुमाली और माली। जिसमें माली बलवानों में श्रेष्ठ था–

"त्रीन पुत्राञ्जनयामास त्रेताग्निसमविग्रहान्।
माल्यवन्तं सुमालिं च मालिं च बलिनां वरम्।।[7]

माल्यवान, सुमाली और माली ब्रह्मा जी की कठोर तपस्या कर अजेय होने का वर प्राप्त कर विश्वकर्मा जी के द्वारा निर्मित स्वर्णपुरी लंका में निवास करने लगे। इन तीनों का विवाह नर्मदा नामक गान्धर्वी की पुत्रियों से हुआ। माल्यवान् की स्त्री का नाम सुन्दरी था–

"ततो माल्यवतो भार्या सुन्दरी नाम सुन्दरी''।[8]

माल्यवान के वज्रमुष्टि, विरूपाक्ष, राक्षस, दुर्मुख, सुप्तघ्न, यज्ञकोप, मत्त और उन्मत– ये सात पुत्र थे तथा अनला नामक एक पुत्री भी थी। सुमाली की पत्नी का नाम केतुमती था और इनके दश पुत्र थे – प्रहस्त, अकम्पन, विकट, कालिकामुख, धूम्राक्ष, दण्ड, महाबली, सुपाश्व, संह्दि, प्रघस तथा राक्षस भासकर्ण। इनकी चार पुत्रियाँ राका, पुष्पोत्कटा, कैकसी और कुम्भीनसी थी। माली की पत्नी वसुदा थी जिनके चार पुत्र थे– अनल, अनिल, हर और सम्पाति। ये सभी विभीषण के मंत्री थे–

"अनलष्चानिलश्चैव हरः सम्पातिरेव च।

एते विभिषणामात्या मालेयास्ते निशाचराः।।[9]

माल्यवान एवं माली का वध भगवान् विष्णु के द्वारा होता है, परंतु सुमाली पाताल लोक में चला जाता है। दीर्घ काल पष्चात् अपनी पुत्री कैकसी के साथ पृथ्वी लोक में आकर विचरण करते हुए कुबेर को देखा। सुमाली बहुत बुद्धिमान था। उसने राक्षसों की उन्नति एवं उनके कल्याणार्थ अपनी पुत्री कैकसी को विवाहार्थ एवं संतानार्थ मुनि विश्रवा के पास भेजा। मुनि विश्रवा ने कैकसी से कहा कि तुम पुत्र प्राप्ति हेतु दारुण वेला में मेरे पास आयी हो इसलिए तुम्हारे पुत्र क्रुर स्वभाव वाले और शरीर से भी भयंकर होंगे तथा उनका क्रुर–कर्मा राक्षसों के साथ ही प्रेम होगा। कुछ काल के अनन्तर अत्यन्त भयानक और क्रुर स्वभाव वाले एक राक्षस को जन्म दिया। उसके रुप रंग के अनुसार पिता विश्रवा ने पुत्र का नामकरण 'दशग्रीव' किया।

"अथ नामाकरोत् तस्य पितामहसमः पिता।

दशग्रीवः प्रसूतोऽयं दशग्रीवो भविष्यति।।[10]

उसके बाद महाबली कुम्भकर्ण, शूर्पनखा उत्पन्न हुए। तदनन्तर धर्मात्मा विभीषण का जन्म हुआ। रावण, कुम्भकर्ण एवं विभीषण ने विभिन्न प्रकार से दस हजार वर्षों तक अनवरत तपस्या कर ब्रह्मा जी से मनोवाञ्छित वर प्राप्त किए। रावण आदि को वर प्राप्त जानकर सुमाली अपने राक्षस चार मंत्रियों मारीच, प्रहस्त, विरूपाक्ष और महोदय के साथ रसातल से बाहर आया–

"मारीचष्च प्रहस्तश्च विरूपाक्षो महोदरः।

उदतिष्ठन् सुसंरब्धाः सचिवास्तस्य रक्षसः।।[11]

राक्षसों से घिरा हुआ सुमाली दशग्रीव के पास जाकर उसे गले लगा लिया और उसे वैश्रवण(कुबेर) से लंका वापस लेने की बात कही। कुबेर रिष्ता में दषग्रीव का बड़ा सौतेला भाई था।

दशग्रीव ने लंका वापस लेने की बात पर अपने नाना सुमाली को कठोर वचन कहते हुए कहा– "नानाजी! धनाध्यक्ष कुबेर हमारे बड़े भाई हैं, अतः उनके सम्बन्ध में आपको मुझसे ऐसी बात नही कहनी चाहिये।

"वित्तेशो गुरुरस्माकं नार्हसे वक्तुमीदृशम्।[12]

तदनन्तर निषाचर प्रहस्त ने प्रसंगवश दशग्रीव से कहा कि 'अदिति और दिति दोनों सगी बहनें प्रजापति कश्यप की पत्नियाँ थीं–

"अदितिश्च दितिश्चैव भगिन्यौ सहिते हि ते।

भार्ये परमरूपिण्यौ कश्यपस्य प्रजापतेः।।[13]

अदिति ने देवताओं को जन्म दिया और दिति ने दैत्यों को। कालान्तर में प्रभु विष्णु ने दैत्यों को मारकर उनके अक्षय राज्य देवताओं को दे दिया।

रावण ने अपनी बहन शूर्पणखा का विवाह कालका का पुत्र विद्युज्जिह्व के साथ कर दिया। एक दिन वह वन में शिकार खेल रहा था उसी समय दिति पुत्र मय के साथ एक कन्या को देखा। वार्ता क्रम में मय ने कहा यह मरी पुत्री मन्दोदरी है, जिसकी माता अप्सरा हेमा और भाई मायावी और दुन्दुभि हैं। तुम इससे विवाह कर लो। रावण प्रसन्नचित हो मन्दोदरी से विवाह कर लेता है। रावण ने विरोचन कुमार बलि की दौहित्री वज्र ज्वाला से कुम्भकर्ण के साथ एवं गन्धर्वराज महात्मा शैलुष की कन्या सरमा से विभीषण का विवाह कराया। रावण के पुत्र का नाम मेघनाद था।

पुराणों के अनुसार दैत्य वंश का वर्णन भी प्राप्त होता है। मारीचि(कश्यप) की संतान हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष, वज्रांग हुए। हिरण्यकशिपु से प्रह्लाद तथा इसी वंश में अनुह्लाद, ह्लाद, संह्लाद्, विरोपन, कुंभ, निकुम्भ, वलि, वाण आदि के साथ ही हिरण्याक्ष के उल्कूर, शकुनि, भूत संतापन, महानाभि, महाबाहु और कालनामा नाम छः पुत्र का प्रसंग प्राप्त होता है। वज्रांग का पुत्र तारक था। कश्यप की दूसरी पत्नी दनु से दानव वंश चला, जिसके प्रतिनिधि पुरूष शंवर, शंकर, एकचक्र, महाबाहु, तारक, वृषपर्वा, पुलोमा, विप्रचिति आदि हुए। वृषपर्वा की कन्या शमिष्ठा से ययाति चन्द्रवंशी से चंद्रवंश का मुख्य पुरुष पुरु हुआ। पुलोमा और कालिका नामक दो कन्यायें भी दनु की हुई। दिति की एक पुत्री सिंहिका का विवाह विप्रचिति से हुआ, जिनके वंष में शल्ल, वातापि, नमुचि, इल्वल, नरक, कालनाम तथा चक्रोधि आदि पुरुष हुए। प्रसिद्ध दैत्य निवात कवच तपस्वी थे।[14]

कालान्तर में राक्षस जाति के अन्तर्गत् अनेक वहिष्कृत जातियाँ घुल मिल गयीं। इनमें असुर, दैत्य, दानव, पिशाच आदि का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।

इस तरह महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रामायण में राक्षसों की वंशावली का वर्णन किया है। साथ ही अन्य प्राचीन ग्रन्थों में भी राक्षसों एवं उनके सदृष विभिन्न जातियों की वंशावली प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रंथः-

1. विष्णु पुराण
2. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 2/3
3. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 2/32-33
4. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 4/01 एवं 04
5. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 4/9-13 हिन्दी अनुवाद
6. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 4/14
7. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 5/6
8. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग - 5/35

9. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग – 5/45
10. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग – 9/33
11. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग – 11/02
12. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग – 11/10 1/2
13. वा॰ रा॰, उ॰ का॰, सर्ग – 11/15
14. आचार्य चतुरसेन – वैदिक संस्कृति आसुरी प्रभाव पृ॰–21 से।